एक पैकेट मूंगफली

पिछली सर्दियों की बात है। नवंबर का महीना था, मौसम कुछ खास अच्छा नहीं था। मुझे देहरादून से बरैली जाना था। मेरी ट्रैन टिकट कन्फर्म थी। 18 :20 की ट्रैन थी देहरादून से। दो दिन पहले ही मैंने टिकट बुक किया था तो मुझे याद था। सामान वगैरह सब पैक कर रखा था लेकिन न जाने कैसे मैं 18:20 की जगह 8 :20 याद कर बैठी। मेरे घर से स्टेशन लगभग 10 किलोमीटर की दूरी पर था। ठीक 7 बजे मैंने ऑटो बुक किया, जैसे ही ऑटो आया, सामान रखा और पहुंच गयी स्टेशन। जैसे ही स्टेशन में प्रवेश किया सामने बोर्ड पर अपनी ट्रैन के नाम, नंबर और प्लेटफार्म का इंतज़ार करने लगी। 10 मिनट हो गए। मुझे टेंशन होने लगी। पूछताछ काउंटर पर बहुत भीड़ थी लेकिन फिर भी मैंने हिम्मत की और जाकर पूछ बैठी। मैडम वो 8:20 वाली बरैली की ट्रैन कौन से प्लेटफार्म पर आएगी। मैडम लगभग तिलमिलाते हुए बोली – अभी कोई ट्रैन नहीं है, 2 घंटे पहले ही एक गयी है। अगली रात को 11:50 पर है।

ओह !! मेरा मुँह खुला का खुला रह गया। जल्दी से टिकट निकला और टाइम देखा। अरे, यह तो 18:20 था मतलब 6:20 शाम को। अब क्या करूँ, जाना भी जरुरी है, कल एग्जाम है।

चलो कोई नहीं, एक और ऑटो बुक किया और पहुंच गयी – बस स्टैंड। मुझे याद था 8:20 पर देहरादून से बरैली की सीधी बस जाती है। बस खड़ी थी, तुरंत अंदर गयी और सीट ले ली। साफ़ सुथरी बस थी। कहीं कहीं कुछ पॉलिथीन और कुछ भुट्टे के टुकड़े पड़े थे लेकिन फिर भी काफी हद तक साफ़ ही थी।

आधी रात को बस एक ढाबे पर खाना खाने के लिए रुकी। रात के 11:30 बज रह थे। ढाबे पर खाना तो अच्छा नहीं मिलेगा यही सोच कर में एक कोल्ड ड्रिंक और चिप्स का पैकेट ले आई। अपनी सीट पर बैठ कर खाने लगी।

थोड़ी देर में मैंने अपनी खिड़की से एक मूंगफली का ठेला देखा। गरम गरम मूंगफली एक जलती हुई मटकी के नीचे से अच्छी लग रही थी। मन हुआ कि मूंगफली खाई जाई। उतरी और झट से 10 रुपये की मूंगफली ले आई। लेकिन यह क्या, जैसे ही बस में चढ़ी, मुझे लगा मूंगफली तो ले ली लेकिन खाउंगी कैसे। क्यूंकि इनको खाने में तो बहुत कूड़ा होगा। अच्छी खासी साफ़ सुथरी बस गन्दी हो जायेगी। तभी एक विचार आया। अगर चिप्स का पैकेट ख़तम कर लूं तो उसमे मूगफली के छिलका डाल सकती हूँ।

जल्दी जल्दी चिप्स खाने लगी। जैसे ही चिप्स का पैकेट ख़तम हुआ, उसको अपनी गोद में रखा और लगी मूंगफली छीलने। खाने में मजा आ रहा था।

थोड़ी देर में ड्राईवर और कंडक्टर भी आ गए। और गाडी ढाबे से निकल गयी। मैंने नोटिस किया कि मेरी सीट के पीछे बैठी हुई आंटी और उनकी बेटी भी मूंगफली खा रहे थे। कोतुहल बस मैंने जानना चाहा कि वो कहीं छिलका बस में फ़ेंक कर बस गन्दी तो नहीं कर रहे। लेकिन नीचे तो कोई छिलका नहीं था।

हलके से सीट के बीच में से झाँक कर देखा तो वो चार्जिंग पॉइंट के बगल में एक छोटे से बॉक्स में छिलका डाल रही थी।

बहुत देर सोचते रही कि इनको बोलू कि नहीं और फिर मन नहीं माना।

"आंटी, एक बात बोलू, आप बुरा तो नहीं मानेगी" – मैंने बोला।

वो बोली "हाँ, बोलो"

"आंटी, आप जो मूंगफली के छिलका उस बॉक्स में फेंक रही हो, वो दरअसल फ़ोन रखने के लिए बना है, आप प्लीज उससे गन्दा ना कीजिये। आप चाहे तो में आपको यह चिप्स का पैकेट दी देती हूँ, मैंने भी अपने छिलका इसमें ही रख रही हूँ"

संपर्क सूत्र

शीतल गुप्ता
पीएच. डी. शोधार्थी
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा
खैरताबाद, हैदराबाद
दूरभाष – 9640600018
Email – guptasheetal02@gmail.com